Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=210
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE 2023, VOL- 11/77
https://doi.org/10.5281/zenodo.8137688

किशोरों पर सोशल मीडिया के प्रभावों के प्रति परिजनों के दृष्टिकोंण

प्रमोद कुमार[1] एवं नीतू[2] Ph. D.

[1] (शोध छात्र) नारायण कॉलेज शिकोहाबाद

[2] प्रोफेसर (अध्यक्षा) समाजशास्त्र विभाग

नारायण कॉलेज शिकोहाबाद (सम्बद्ध– डॉ भीमराव अ0 वि0वि0 आगरा)

Paper Received On: 21 JUNE 2023

Peer Reviewed On: 30 JUNE 2023

Published On: 01 JULY 2023

Abstract

आधुनिक जनसंचार साधन सामाजिक परिवर्तन में अहम भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री शिक्षाप्रद, विकासोन्मुखी, ज्ञान में अभिवृद्धि करने वाले, आधुनिकतम आविष्कार विश्व पटल रूप में दिखाए जाते हैं जो किशोरों के सामान्य ज्ञानार्जन वृद्धि में रचनात्मक/सर्जनात्मक भूमिका निभाते हैं। शैक्षिक कार्यक्रमों को छोड़कर अन्य उपलब्ध सामग्री कार्यक्रम/सीरियल मनोरंजनार्थ आते हैं; तो कुछ अत्यधिक गन्दे/भद्दे होते हैं, जो किशोरों की मानसिकता को कुप्रभावित करते हैं एवं उन पर दुष्प्रभाव डालते हैं।''

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिभषायें : जनसंचार साधन, सोशल मीडिया, किशोर विचलन, सामाजिक परिवर्तन।

परिकल्पनाः सोशल मीडिया का किशोरों की मानसिकता पर मिश्रित (सकारात्मक एवं नकारात्मक) प्रभाव पड़ता है।''

प्रविधि : प्रस्तुत अध्ययन हेतु वियलेषणात्मक अध्ययन पद्धति का चयन किया गया है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तथ्यो का विश्लेषण एवं निष्कर्षः

निस्सन्देह; परम्परागत साधनों की तुलना में आधुनिक जनसंचार साधन सामाजिक परिवर्तन में अहम भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। आधुनिक लोकप्रिय साधन के रूप में सोशल मीडिया; मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। कहना अनुपयुक्त न होगा कि सोशल मीडिया (गूगल, फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप आदि) आधुनिक जनसंचार साधनों में मनोरंजन का सबसे महत्वपूर्ण तथा अत्याधुनिक साधन ही नहीं है अपितु सुलभ उपलब्ध साधन है और सशक्त माध्यम भी; क्यों कि सम्प्रेषण के साथ–साथ सोशल आज अत्यन्त उन्नत अवस्था में है; घर बैठे ही विश्व निहारा जा सकता है; कहाँ तथा कब; क्या हो रहा है; प्रत्यक्ष रूप में देख जा सकता है।

''किशोर'' जिनकी कि अवस्था भटकाव व विचलन की होती है; पर सोशल मीडिया के प्रभावों का इस अध्ययन में, परिजनों के दृष्टिकोणों के प्रसंग में; समाजशास्त्रीय मूल्यांकन किया गया है कि अधिक समय सोश्ल मीडिया के सम्पर्क रहने से, अश्लील मनोरंजन, शिक्षाध्ययन में बाधा, अनैतिकता में वृद्धि, अपराधों में वृद्धि, लोक लाज के प्रति बदलती मानसिकता, भारतीय संस्कृति के प्रति इत्यादि सन्दर्भो में उनके किशोरों पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है ? और उनके परिजन कैसा अनुभव करते हैं ? अध्ययन से प्राप्त तथ्यों पर अग्रांकित तालिकाएं संक्षिप्त प्रकाश डालती हैं–

''क्या सोशल मीडिया के कारण शिक्षा/अध्ययन में बाधा (ब्यवधान) होता है ?''

तालिका 1 : ''क्या सोशल मीडिया शिक्षा/ अध्ययन में बाधकहै ?''

क्रमांक	*शिक्षा/अध्ययन में व्यवधान होता है।*	*आवृत्तियाँ*	*प्रतिशत*
1.	हां	249	83.00
2.	नहीं	––	00.00
3.	उदासीन	51	17.00
4.	अनुत्तरित	––	00.00
	समस्त योग	300	100.00

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण तथा सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया के कारण शिक्षा में बाधा उत्पन्न होने के प्रसंग में न्यादर्शों के परिजनों में से 249(83.00:) न्यादर्शों ने हाँ तथा 15(17.00:) न्यादर्शों ने उदासीन अनुभव करते हैं; ऐसा स्वीकार किया है। इन तथ्यों के प्रकाश में स्पष्ट होता है कि परिजनों के विचार में दूरदर्शन देखने से अध्ययन में बाधा उत्पन्न होती है। कारण पूछे जाने पर बताया कि शैक्षिक कार्यक्रमों को छोड़कर अधिकांशतः कार्यक्रम/सीरियल मनोरंजनार्थ आते हैं; तो कुछ अत्यधिक गन्दे। गन्दे/भद्दे रोल्स, किशोरों की मानसिकता को कुप्रभावित करते हैं एवं उन पर दुष्प्रभाव डालते हैं।'' अनैतिकता में वृद्धि के प्रति उनके दृष्टिकोणों को भी जानने का प्रयास किया गया है। सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

<u>तालिका 2:</u> क्या सोशल मीडिया अनैतिकता में वृद्धि के लिए उत्तरदायी है ?''

क्रमांक	*प्रत्युत्तर*	*आवृत्तियाँ*	*प्रतिशत*
1	हां	156	52.00
2	नहीं	90	30.00
3	उदासीन	36	12.00
4	अनुत्तरित	18	06.00
	योग	300	100.00

प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण तथा सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री से अनैतिकता में वृद्धि होती है; के सम्बन्ध में 156 (52.00 प्रतिशत) न्यादर्शों ने ''हां'' तथा सर्वाधिक 90(30.00प्रतिशत) न्यादर्शों ने ''नहीं'',36(12.00प्रतिशत) न्यादर्शों ने ''उदासीन'' प्रत्युत्तर प्रदान किए हैं। इस प्रश्न पर 18 सूचनादाता अनुत्तरित पाये गये हैं। इन समस्त प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में कहा जा सकता है कि प्रतिशतता को दृष्टिगत करते हुए कहा जा सकता है कि '' सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री से अनैतिकता बढ़ रही है।''

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अनुसंधित्सु ने सभी 300 न्यादर्शों से यह भी प्रश्न किया गया है कि– ''क्या सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री से अपराधों में वृद्धि हो रही है ?

क्रमांक	*प्रत्युत्तर*	*आवृत्तियाँ*	*प्रतिशत*
1	हां	183	61.00
2	नहीं	90	30.00
3	उदासीन	12	04.00
4	अनुत्तरित	15	05.00
	योग	300	100.00

प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण तथा सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट है कि अध्ययन किए गए कुल 300 किशोरों के परिजनों के सोच के अनुसार कि दूरदर्शन देखने से किशोरों में अपराधों में वृद्धि के प्रसंग में 183(61.00 प्रतिशत) ने ''हां'' कहा है जबकि 90(30. 00 प्रतिशत) न्यादर्शों ने ''नहीं'' कहा है। 12(04.00:) न्यादर्श इस प्रश्न पर उदासीन/तटस्थ रहे हैं। 15 न्यादर्श इस प्रश्न पर अनुत्तरित रहे हैं। इन प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में निष्कर्ष बतौर यह कहा जा सकता है कि न्यादर्शों के परिजनों की दृष्टि में सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री से अपराधों में भी वृद्धि होती है।

इन समस्त प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री शिक्षाप्रद, विकासोन्मुखी, ज्ञान में अभिवृद्धि करने वाले, आधुनिकतम आविष्कार विश्व पटल रूप में दिखाए जाते हैं जो किशोरों के सामान्य ज्ञानार्जन वृद्धि में रचनात्मक/सर्जनात्मक भूमिका निभाते हैं। शैक्षिक कार्यक्रमों को छोड़कर अन्य उपलब्ध सामग्री कार्यक्रम/सीरियल मनोरंजनार्थ आते हैं; तो कुछ अत्यधिक गन्दे/भद्दे होतम हैं, जो किशोरों की मानसिकता को कुप्रभावित करते हैं एवं उन पर दुष्प्रभाव डालते हैं।''

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भः

दास बैन्नी ; सोशल मीडियाः इम्पेक्ट ऑन द सोसायटी, सोसल वैलफेयर, नई दिल्ली, 37(7) अक्टूबर, 2010, पृ.37

शाह अनुपमा व कौशल अंजना ; विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का शैक्षिक प्रभाव; द जर्नल ऑफ इण्डियन एजुकेशन, 13(5), जनवरी, 1988, पृ.11

शर्मा हेमलता ;सोशल मीडिय का महिलाओं पर प्रभाव; क्लासिक पब्लिसर्स, दिल्ली 2008 पृष्ठांकन 61–62

भास्कर राव ; सोसल इफैक्ट्स ऑफ मास मिडिया; विद स्पेशल रैफरेन्स टू सोशल मीडिया, ज्ञान पब्लिकेसन्स एण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स, 2015 पृष्ठ 45

डोगरा भरत ;सोशल मीडिया एण्ड वाइलेन्स ; इकोनामिक एण्ड पॉलिटीकल वीकली (रिसर्च जर्नल), 29(34), 1994 पृष्ठः11

सक्सैना भारती; स्कूल स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव; एक सर्वेक्षण (प्रकाशित शोध प्रबन्ध) शिक्षा संकाय, दयालबाग डीम्ड यूनिवर्सिटी (प्रकाशन) आगरा, उ.प्र. 2017,

Cite Your Article as:

Pramod Kumar & Neetu. (2023). KISHORO PAR SOCIAL MEDIA KE PRBHAVO KE PRATI PARIJANO KE DRUSHTIKON. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 11(77), 113–117. https://doi.org/10.5281/zenodo.8137688

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies